सकलसंयम लब्धि अधिकार 4

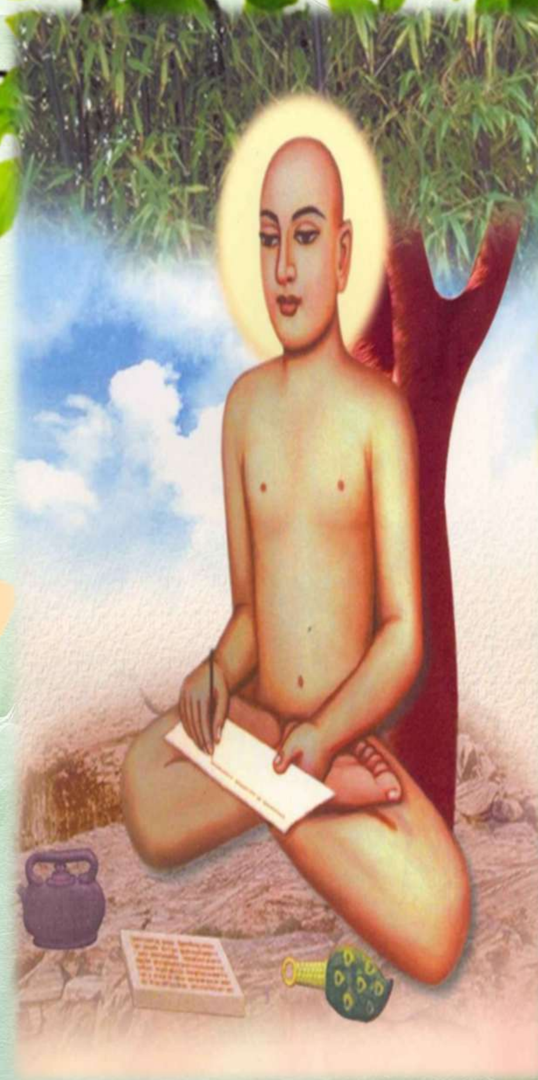

Presentation Developed By:

Smt Sarika Vikas Chhabra

www.JainKosh.org

मंगलाचरण

सिद्धे जिणिंदचंदे, आयरिय-उवज्झाय-साहुगणे ।
वंदिय सम्मद्दंसण-चरित्तलद्धिं परूवेमो ॥1॥

www.JainKosh.org

सयलचरित्तं तिविहं, खयउवसमि उवसमं च खइयं च । सम्मत्तुप्पत्तिं वा, उवसमसम्मेण गेण्हदो पढमं ॥189॥

- अन्वयार्थ- (सयलचरित्तं) सकलचारित्र (तिविहं) तीन प्रकार का है – (खयउवसमि) क्षायोपशमिक (उवसमं) औपशमिक (च) और (खइयं) क्षायिक।
- (उवसमसम्मेण) औपशमिक सम्यक्त्व के समान (पढमं) प्रथम सकलचारित्र को (क्षायोपशमिक चारित्र को) (गेण्हदो) ग्रहण करने वाले जीव की विधि (सम्मत्तुप्पत्तिं वा) सम्यक्त्व की उत्पत्ति के समान ही जानना चाहिए ॥189॥

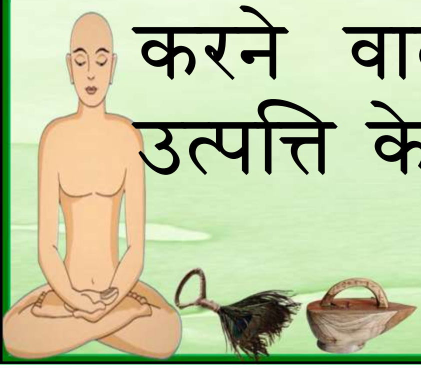

www.JainKosh.org

सकल संयम लब्धि

सकल सावद्य के विरतिस्वरूप

5 महाव्रत, 5 समिति, 3 गुप्ति को प्राप्त होने वाले मनुष्य का

जो विशुद्धिरूप परिणाम होता है,

उसे सकलसंयम लब्धि कहते हैं ।

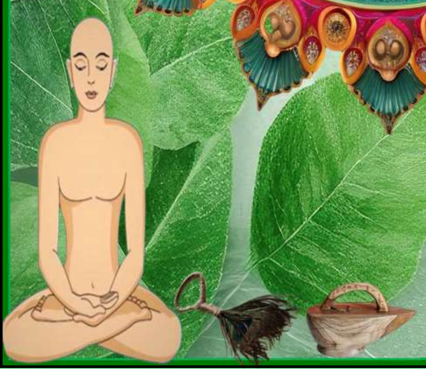

यह अनंतानुबंधी आदि 12 कषायों के
उदयाभाव लक्षण उपशमना के होने पर उत्पन्न होती है ।

सकल चारित्र

- **क्षायोपशमिक** (6-7 गुणस्थान)
- **औपशमिक** (8-11 गुणस्थान)
- **क्षायिक** (8-10, 12-14 गुणस्थान)

इस चतुर्थ अधिकार में क्षायोपशमिक चारित्र का वर्णन है ।

पाँचवें अधिकार में औपशमिक चारित्र की प्राप्ति का वर्णन है ।

छठे अधिकार में क्षायिक चारित्र की प्राप्ति का वर्णन है ।

क्षायोपशमिक चारित्र की प्राप्ति

यह क्षायोपशमिक चारित्र तीनों प्रकार के सम्यक्त्व के साथ हो सकता है ।

वहाँ प्रथमोपशम सम्यक्त्व के साथ क्षायोपशमिक चारित्र होने की सारी विधि वैसी ही है, जैसी प्रथमोपशम सम्यक्त्व की प्राप्ति में कही गयी है ।

मिथ्यादृष्टि आदि को वेदक सम्यक्त्व के साथ सकलसंयम की प्राप्ति किस प्रकार होती है – यह आगे कहते हैं ।

वेदगजोग्गो मिच्छो, अविरददेसो य दोण्णिकरणेण । देसवदं वा गेण्हदि, गुणसेढी णत्थि तक्करणे ॥190॥

- अन्वयार्थ - (वेदगजोग्गो) वेदक-सम्यक्त्व ग्रहण के योग्य (मिच्छो) मिथ्यादृष्टि (य) और (अविरददेसो) अविरत और देशविरत (दोण्णिकरणेण) दोनों करणों के द्वारा (देसवदं वा) देशव्रत के समान संकलसंयम को (गेण्हदि) ग्रहण करता है ।
- (तक्करणे) उस करण में (गुणसेढी) गुणश्रेणि (णत्थि) नहीं होती है ॥190॥

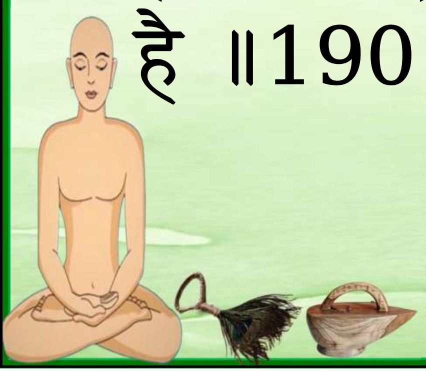

सकलसंयम की प्राप्ति – दो करण द्वारा

वेदक-प्रायोग्य मिथ्यादृष्टि, अविरत सम्यग्दृष्टि और देशविरत जीव; सकलसंयम की प्राप्ति हेतु अध:प्रवृत्तकरण और अपूर्वकरण – इन दो करण परिणामों को करते हैं ।

जैसे देशव्रत की प्राप्ति में दो करण एवं कार्य कहे थे, वैसे ही सकलसंयम की प्राप्ति में दो करण एवं इसके कार्य जानने चाहिए ।

यहाँ भी सकलसंयम प्राप्त करने हेतु करण में मिथ्यादृष्टि या अविरत सम्यक्त्वी को गुणश्रेणी निर्जरा नहीं होती है । सकलसंयम की प्राप्ति होने के प्रथम समय से संयमसंबंधी गुणश्रेणि प्रारंभ होती है ।

एत्तो उवरिं विरदे, देसो वा होदि अप्पबहुगो त्ति ।
देसो त्ति य तट्ठाणे, विरदो त्ति य होदि वत्तव्वं ॥191॥

- अन्वयार्थ- (एत्तो उवरिं) यहाँ से आगे (अप्पबहुगो त्ति) अल्प-बहुत्व तक का सभी कथन (देसो वा) देशचारित्र के समान (विरदे) विरत में (होदि) होता है ।
- (देसो त्ति य तट्ठाणे) जहाँ देशचारित्र ऐसा शब्द है उस स्थान पर (विरदो त्ति य) विरत (सकलचारित्र) ऐसा (वत्तव्वं होदि) कथन करें ॥191॥

सकलसंयम के लिए करण के आवश्यक

अध:प्रवृत्तकरणादि के काल का अल्प-बहुत्व सम्यक्त्व की उत्पत्तिवत् है ।

यहाँ भी अध:प्रवृत्तकरण के चारों आवश्यक होते हैं । प्रत्येक समय अनंतगुणी विशुद्धि के द्वारा यह करण समाप्त होता है ।

अपूर्वकरण में स्थितिकांडक, अनुभागकांडक होते हैं । गुणश्रेणि, गुणसंक्रमण नहीं होते । हजारों कांडकों के होने पर अपूर्वकरण समाप्त होता है ।

तदनंतर काल में सकलसंयमी होता है ।

सकलसंयम की प्राप्ति

सकलसंयमी होने के प्रथम समय से असंख्यात समयप्रबद्धों का अपकर्षण करके अवस्थित गुणश्रेणी को करता है । यहाँ गुणश्रेणी का आयाम देशसंयम की गुणश्रेणी आयाम से संख्यात गुणा हीन होता है ।

सकलसंयम की प्राप्ति से एक अंतर्मुहूर्त पर्यंत एकांतवृद्धि काल होता है, जिससे परिणामों की विशुद्धि प्रत्येक समय अनंत गुणा बढ़ती जाती है । इसके पश्चात् स्वस्थान सकलसंयत कहलाता है ।

एकांतवृद्धि काल में स्थितिकांडक, अनुभागकांडक होते हैं । गुणश्रेणी के लिये द्रव्य प्रत्येक समय में असंख्यात गुणा लिया जाता है ।

स्वस्थान सकलसंयत के स्थितिकांडक, अनुभागकांडक नहीं होते ।

यहाँ संयम निमित्तक गुणश्रेणी होती है । विशुद्धि-संक्लेश के परावर्तन से 4 प्रकार की वृद्धि या हानि से द्रव्य का अपकर्षण करके गुणश्रेणि करता है ।

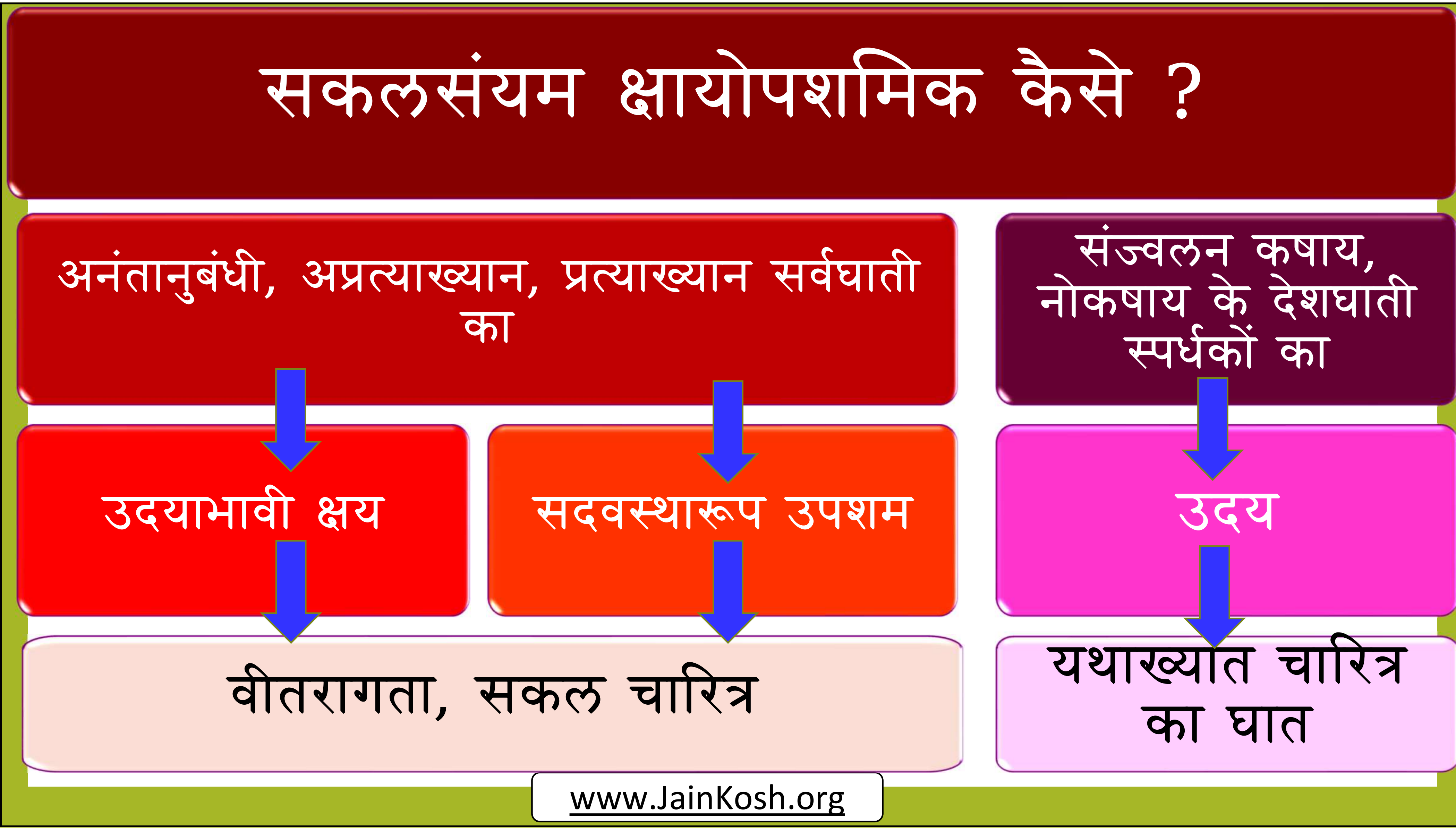
सकलसंयम क्षायोपशमिक कैसे ?
अनंतानुबंधी, अप्रत्याख्यान, प्रत्याख्यान सर्वघाती का
संज्वलन कषाय, नोकषाय के देशघाती स्पर्धकों का
उदयाभावी क्षय
सदवस्थारूप उपशम
उदय
वीतरागता, सकल चारित्र
यथाख्यात चारित्र का घात
www.JainKosh.org

सकलसंयम में निषेक स्थिति

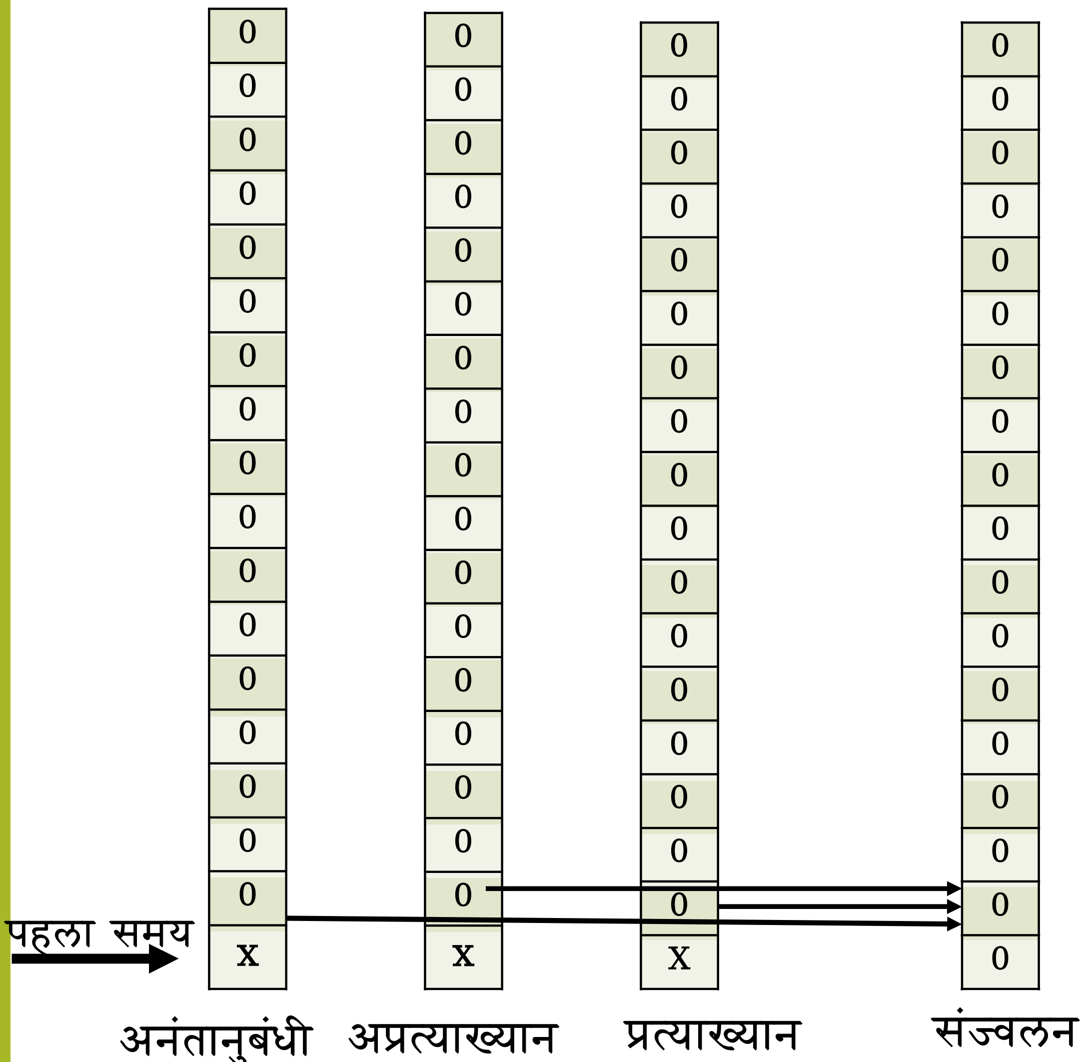

अनंतानुबंधी, अप्रत्याख्यान और प्रत्याख्यान के एक-एक निषेक उदयवान संज्वलन में संक्रमित होते हुये

सकलसंयम

	एकांतवृद्धि	स्वस्थान
स्वरूप	सकलसंयम प्राप्त होने के प्रथम समय से परिणामों की विशुद्धि प्रत्येक समय में अनंत गुणा बढ़ती जाती है।	एकांतवृद्धि के पश्चात् का काल जहाँ परिणामों की विशुद्धि अवस्थित, हानि और वृद्धि लिये होती है ।
काल	सकलसंयम की प्राप्ति से एक अंतर्मुहूर्त काल	एकांतवृद्धि के पश्चात्— जघन्य – अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट – पूर्वकोटि वर्ष से कुछ कम
कार्य	1. असंख्यातगुणा द्रव्य द्वारा गुणश्रेणी 2. स्थितिकांडकघात 3. अनुभागकांडकघात	1. यथायोग्य द्रव्य द्वारा गुणश्रेणी

सकलसंयम से च्युत होकर पुनः प्राप्ति

कोई सकलसंयमी तीव्र संक्लेश की कारणभूत बाह्य द्रव्यादि सामग्री के बिना मात्र अंतरंग में कर्मोदय से उत्पन्न संक्लेश परिणाम के वश से सकलसंयम से गिरकर असंयत सम्यक्त्व गुणस्थान को प्राप्त करता है ।

पुनः वहाँ अल्प अंतर्मुहूर्त ही रहकर शीघ्र ही सकलसंयम को ग्रहण करता है।

उसके भी सकलसंयम की प्राप्ति होने पर कांडकघात नहीं होते हैं क्योंकि करण परिणाम के बिना ही उसने सकलसंयम को ग्रहण किया है ।

कोई सकलसंयमी तीव्र विराधना के कारणभूत बाह्य द्रव्यादि के सन्निधान में सकलसंयम, सम्यक्त्व से गिरकर मिथ्यात्व को प्राप्त होता है ।

वहाँ दीर्घ अंतर्मुहूर्त अथवा संख्यात, असंख्यात वर्षों तक रहकर फिर वेदक सम्यक्त्व के साथ सकलसंयम प्राप्त करता है ।

तब उसके पुनः दोनों करण होते हैं । तब स्थितिघात, अनुभागघात भी होता है ।

अल्प-बहुत्व

क्र.	पद	प्रमाण	गुणकार	संदृष्टि
1	जघन्य अनुभागकांडकोत्कीरण काल	अंतर्मुहूर्त	स्तोक	2 २
2	उत्कृष्ट अनुभागकांडकोत्कीरण काल	अंतर्मुहूर्त	विशेष अधिक	2 २|५ ४
3	जघन्य स्थितिखंडोत्कीरण काल	अंतर्मुहूर्त	संख्यात गुणा	2 २|५|४ ४
4	उत्कृष्ट स्थितिखंडोत्कीरण काल	अंतर्मुहूर्त	विशेष अधिक	2 २|५|४|५ ४ ४
5	एकांतवृद्धि का काल	अंतर्मुहूर्त	संख्यात गुणा	2 २२
6	सकलसंयत का अपूर्वकरण काल	अंतर्मुहूर्त	संख्यात गुणा	2२२|४
7	मिथ्यात्व, मिश्र, असंयत, वेदक, संयमासंयम, संयम का जघन्य काल	अंतर्मुहूर्त	संख्यात गुणा	2 २२|४ ४
8	सकलसंयमी का गुणश्रेणी आयाम	अंतर्मुहूर्त	संख्यात गुणा	2 २२|४ ४ ४
9	जघन्य आबाधा काल	अंतर्मुहूर्त	संख्यात गुणा	2 २२२

क्र.	पद	प्रमाण	गुणकार	संदृष्टि
10	उत्कृष्ट आबाधा काल	अंतर्मुहूर्त	संख्यात गुणा	2२२२ | ४
11	अंतिम स्थिति कांडकायाम	पल्य / संख्यात	असंख्यात गुणा	पल्य २२
12	प्रथम जघन्य कांडकायाम	पल्य / संख्यात	संख्यात गुणा	पल्य २
13	पल्य	पल्य	संख्यात गुणा	पल्य
14	प्रथम उत्कृष्ट स्थितिकांडकायाम	सागर पृथक्त्व	संख्यात गुणा	सा ७ ८
15	जघन्य स्थिति-बंध	अंत:कोड़ाकोड़ी सागर	संख्यात गुणा	सा अं को २ ४ ४ ४
16	उत्कृष्ट स्थिति-बंध	अंत:कोड़ाकोड़ी सागर	संख्यात गुणा	सा अं को २ ४ ४
17	जघन्य स्थिति-सत्त्व	अंत:कोड़ाकोड़ी सागर	संख्यात गुणा	सा अं को २ ४
18	उत्कृष्ट स्थिति-सत्त्व	अंत:कोड़ाकोड़ी सागर	संख्यात गुणा	सा अं को २

अवरे विरदट्ठाणे, होंति अणंताणि फड्डयाणि तदो । छट्ठाणगया सव्वे, लोयाणमसंखछट्ठाणा ॥192॥

- अन्वयार्थ - (अवरे विरदट्ठाणे) जघन्य विरत स्थान में (अणंताणि फड्डयाणि) अनन्त स्पर्धक (होतिं) होते हैं।
- (तदो) उसके आगे (छट्ठाणगया) षट्स्थानपतित (सव्वे) सभी सकलसंयम लब्धिस्थान (लोयाणमसंखछट्ठाणा) असंख्यात लोकप्रमाण षट्स्थानयुक्त हैं ॥192॥

जघन्य सकलसंयम लब्धिस्थान

सर्व जघन्य सकलसंयम लब्धिस्थान में अनंतानंत अविभागप्रतिच्छेद होते हैं ।

सर्व जघन्य सकलसंयम लब्धिस्थान के अविभाग-प्रतिच्छेद $= \frac{\text{उत्कृष्ट सकलसंयम लब्धि}}{\text{अनंत}}$

= अनंत × जीवराशि प्रमाण अविभागप्रतिच्छेद

अर्थात् जघन्य सकलसंयम स्थान में भी जीवराशि से अनंत गुणे अविभाग-प्रतिच्छेद पाये जाते हैं ।

जघन्य से उत्कृष्ट सकलसंयमस्थान असंख्यात लोक बार षट्स्थान से वर्धित है ।

तत्थ य पडिवादगया, पडिवज्जगया त्ति अणुभयगया त्ति ।
उवरुवरि लद्धिठाणा, लोयाणमसंखछट्ठाणा ॥193॥

- अन्वयार्थ - (तत्थ य) उस सकलसंयम लब्धिस्थान में (पडिवादगया) प्रतिपातगत (पडिवज्जगया त्ति) प्रतिपद्यगत और (अणुभयगया त्ति) अनुभयगत – ऐसे (उवरुवरि) ऊपर-ऊपर (लद्धिठाणा) लब्धिस्थान (लोयाणमसंखछट्ठाणा) असंख्यात लोकप्रमाण षट्स्थानवाले हैं ॥193॥

www.JainKosh.org

सकलसंयम लब्धिस्थानों के 3 प्रकार

प्रतिपातस्थान

- सकलसंयम से च्युत होने के पूर्व जो सकलसंयम का अंतिम समयवर्ती स्थान है, वह प्रतिपातस्थान है । इसे प्राप्त करने वाला जीव अगले समय में मिथ्यात्व से संयमासंयमपर्यंत पाँच में से किसी एक गुणस्थान को प्राप्त होता है । यह नीचे के गुणस्थान में गिरने के परिणाम हैं ।

प्रतिपद्यमान स्थान

- सकलसंयम प्राप्त होने के प्रथम समय जो परिणाम संभव हैं, वे प्रतिपद्यमान स्थान हैं । यह मात्र प्रथम समय ही पाये जाते हैं ।

अनुभयगत स्थान

- उपर्युक्त दोनों प्रकार के स्थानों के अतिरिक्त जो अन्य परिणाम हैं, वे अनुभयगतस्थान हैं ।

www.JainKosh.org

पडिवादगया मिच्छे, अयदे देसे य होंति उवरुवरिं । पत्तेयमसंखमिदा, लोयाणमसंखछट्ठाणा ॥194॥

- अन्वयार्थ - संयम से (मिच्छे अयदे देसे य) मिथ्यात्व में, असंयत में और देशसंयत में गिरने वाले संयत के (पडिवादगया) प्रतिपातगत स्थान (उवरुवरिं) ऊपर-ऊपर (पत्तेयं) प्रत्येक (असंखमिदा) असंख्यात लोकमात्र हैं और प्रत्येक में (लोयाणमसंखछट्ठाणा) असंख्यात लोकप्रमाण षट्स्थान होते हैं ॥194॥

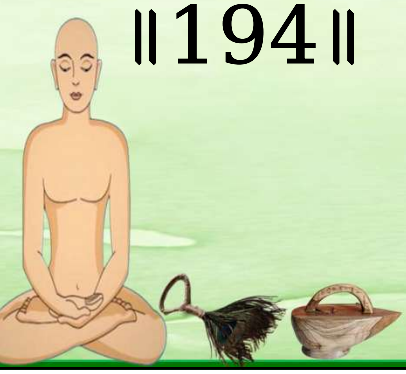

सकलसंयम संबंधी प्रतिपात स्थान

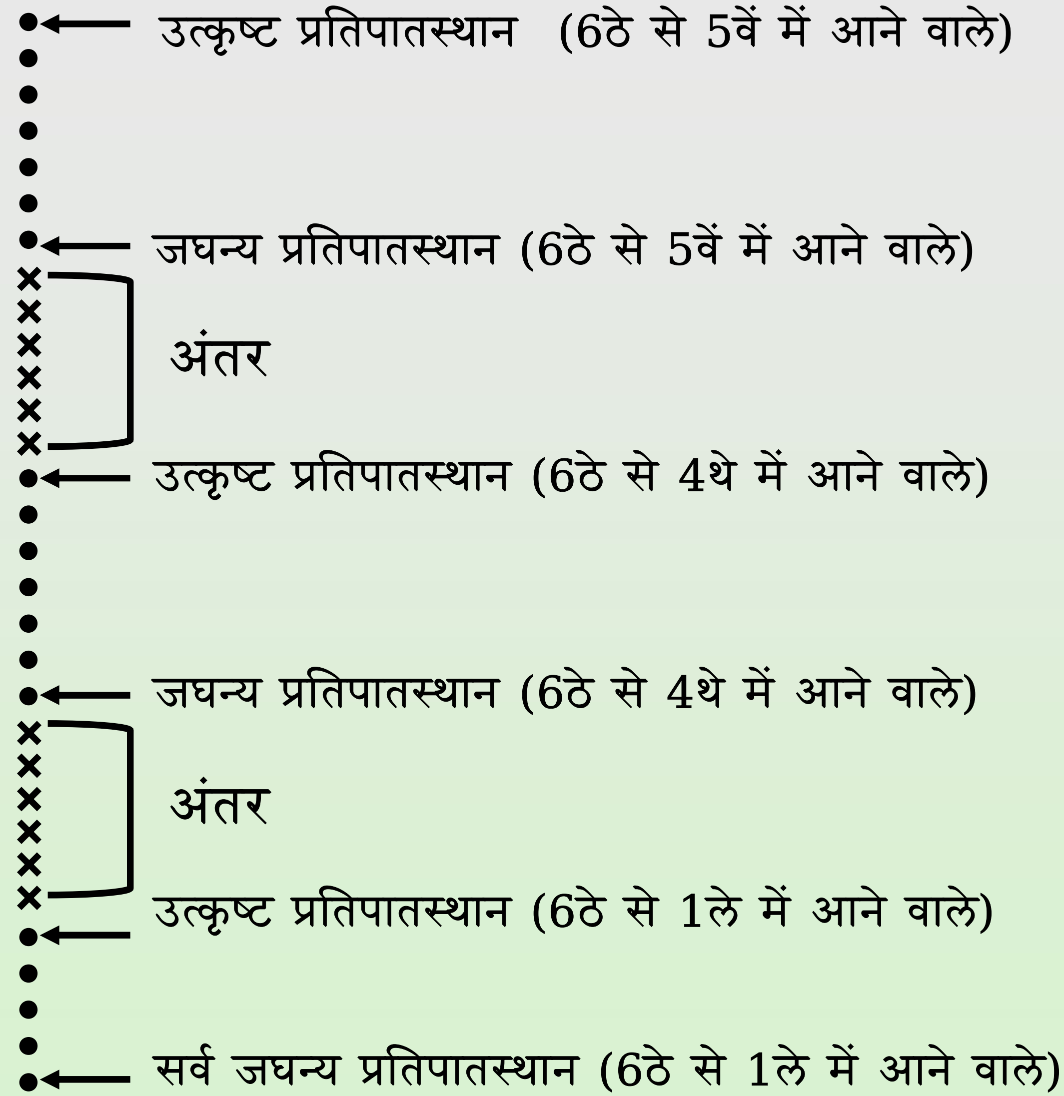

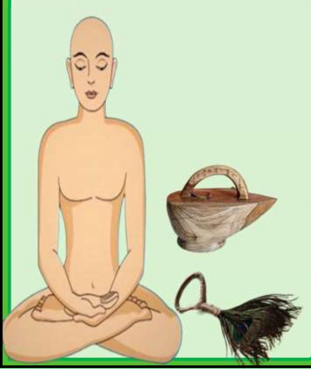

मिथ्यात्व में गिरने वाले के प्रतिपातस्थान

सर्व जघन्य प्रतिपातस्थान; सकलसंयम से गिरकर मिथ्यात्व में जाने वाले सकलसंयमी के अंतिम समय में होता है। यह तीव्र संक्लेशरूप होने के कारण सबसे जघन्य है।

इसके आगे असंख्यात लोकमात्र षट्स्थान जाकर उस योग्य संक्लेश से मिथ्यात्व में गिरने के सम्मुख उत्कृष्ट संयमलब्धि स्थान होता है।

जघन्य लब्धिस्थान से यह अनंतगुणा विशुद्ध है क्योंकि असंख्यात लोकमात्र षट्स्थान के पश्चात् यह उत्कृष्ट परिणाम होता है।

इसके पश्चात असंख्यात लोकमात्र षट्स्थान का अंतर आता है। इस अंतर संबंधी परिणामों की विशुद्धि कोई भी धारण नहीं करता है। ये परिणाम त्रिकाल में भी किसी को नहीं पाये जाते।

असंयम में गिरने वाले के प्रतिपातस्थान

अंतर के पश्चात् असंयम में प्रतिपात के सम्मुख जघन्य सकलसंयम लब्धिस्थान होता है ।

यह मिथ्यात्व में पतित होने वाले के उत्कृष्ट संयमस्थान से अनंतगुणा विशुद्ध होता है क्योंकि बीच में असंख्यात लोकमात्र स्थानों का अंतर है ।

इससे असंख्यात लोकमात्र षट्स्थान जाकर असंयम में ही प्रतिपात के सम्मुख तत् योग्य संक्लेश से उत्कृष्ट सकलसंयम होता है ।

इसके पश्चात् असंख्यात लोकमात्र षट्स्थान का अंतर आता है ।

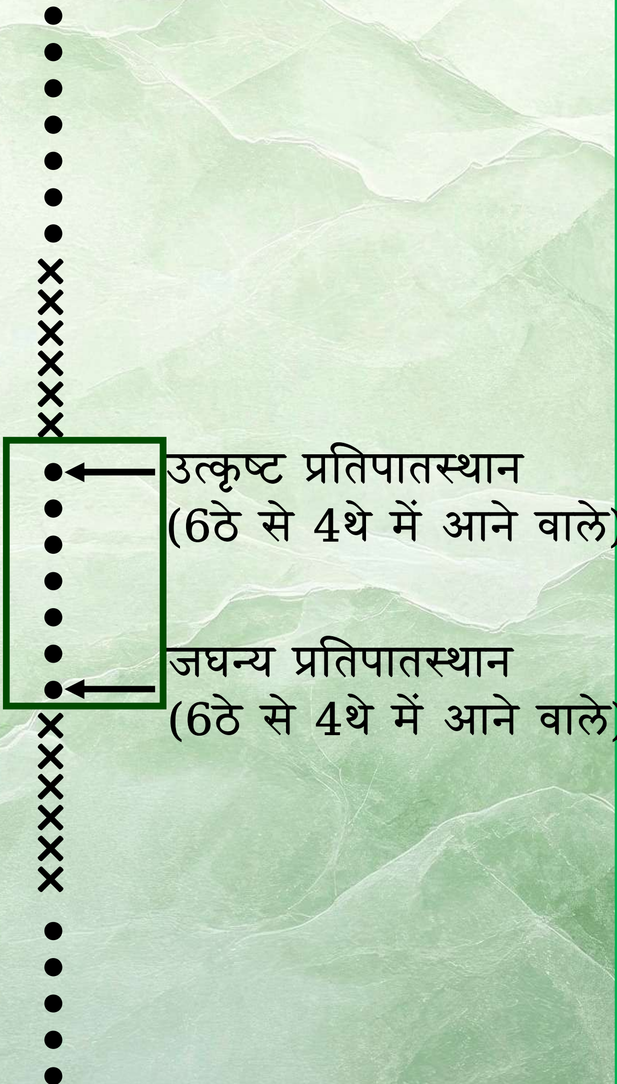

देशसंयम में गिरने वाले के प्रतिपातस्थान

इसके पश्चात् देशसंयम में गिरने वाले के तद्योग्य संक्लेश से जघन्य सकलसंयम स्थान होता है ।

इससे असंख्यात लोकमात्र स्थान जाकर देशसंयम में गिरने वाले के तद्योग्य संक्लेश से उत्कृष्ट सकलसंयम स्थान होता है ।

तीनों जघन्य स्थान तीव्र संक्लेशयुक्त जीव के होते हैं । तीनों उत्कृष्टस्थान तद्योग्य मंद संक्लेशयुक्त जीव के होते हैं ।

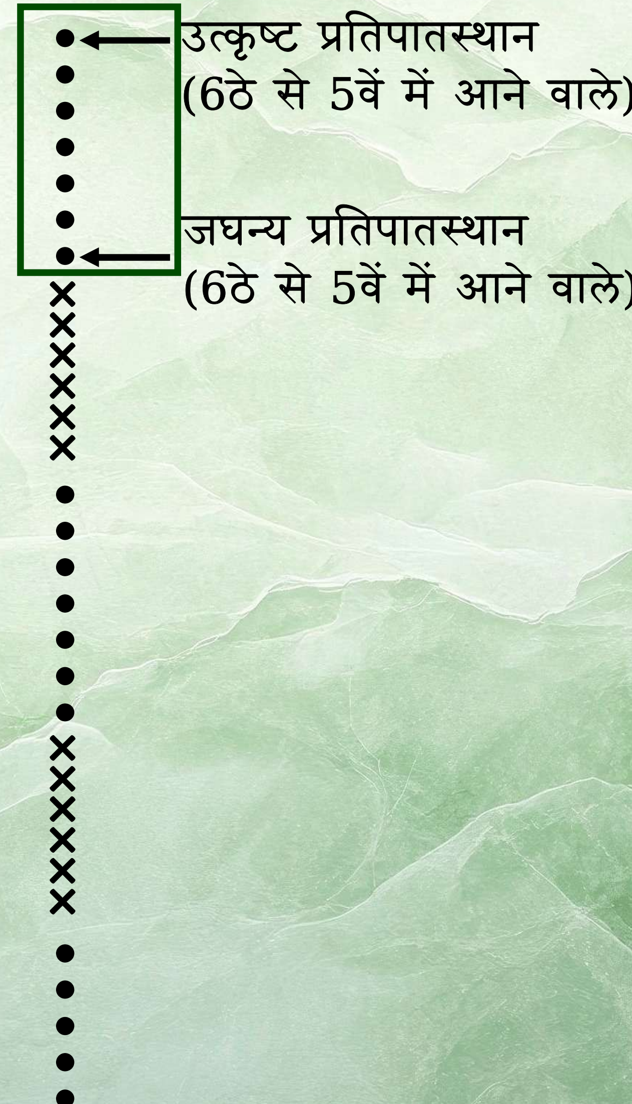

तत्तो पडिवज्जगया, अज्जमिलेच्छे मिलेच्छअज्जे य।
कमसो अवरं अवरं, वरं वरं होदि देसं वा ॥195॥

- अन्वयार्थ - (तत्तो) प्रतिपातस्थानों के आगे (पडिवज्जगया) प्रतिपद्यगत स्थान हैं ।
- वे (अज्जमिलेच्छ मिलेच्छअज्जे य कमसो अवरं अवरं वरं वरं होदि) आर्य मनुष्य का जघन्य, म्लेच्छ मनुष्य का जघन्य, म्लेच्छ मनुष्य का उत्कृष्ट, आर्य मनुष्य का उत्कृष्ट – इस क्रम से (देसं वा) देशसंयत के समान हैं ॥195॥

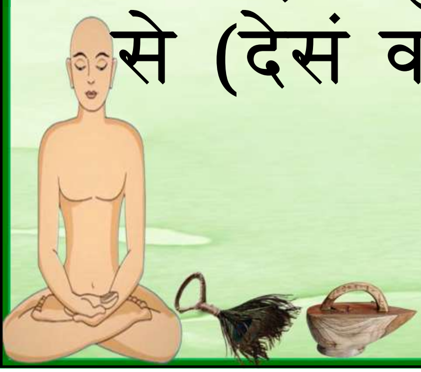

सकल संयम संबंधी प्रतिपद्यमान स्थान

- आर्य मनुष्य का उत्कृष्ट प्रतिपद्यमानस्थान (5वें से 7वे में आने वाले के)
- म्लेच्छ मनुष्य का उत्कृष्ट प्रतिपद्यमानस्थान (5वें से 7वे में आने वाले के)
- म्लेच्छ मनुष्य का जघन्य प्रतिपद्यमानस्थान (1ले से 7वे में आने वाले के)
- आर्य मनुष्य का सर्व जघन्य प्रतिपद्यमानस्थान (1ले से 7वे में आने वाले के)

www.JainKosh.org

मनुष्य

आर्य

- ऋद्धि प्राप्त
- ऋद्धि अप्राप्त

म्लेच्छ

कर्म भूमिज
- म्लेच्छ-खण्डज 850

अंतर्द्वीपज
- कुभोग-भूमिज 96

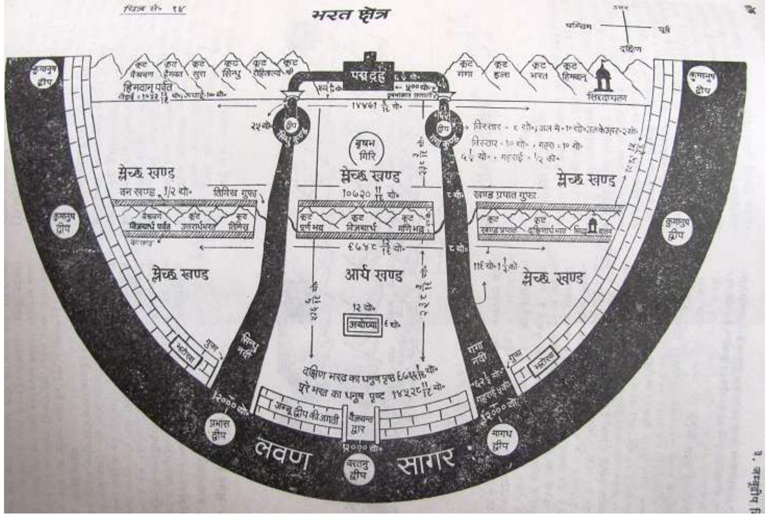

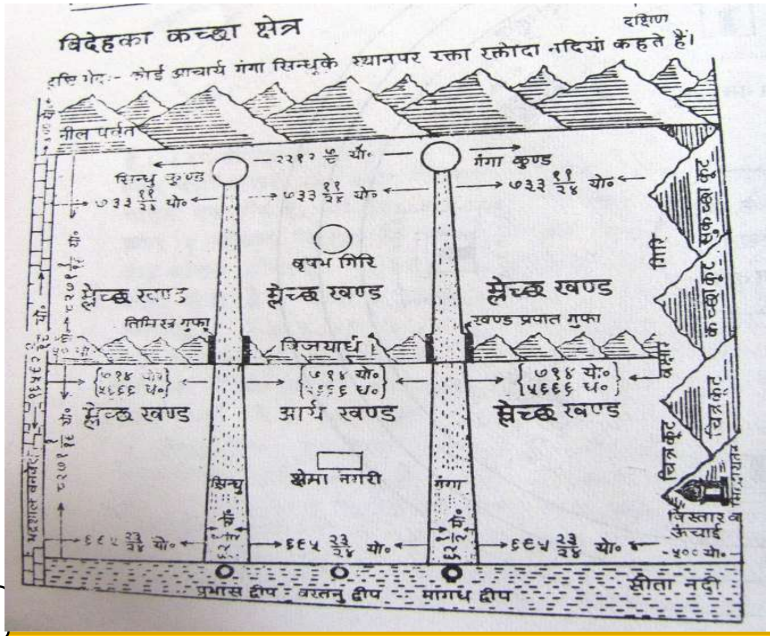

आर्य	म्लेच्छ
जिसमें धर्म की प्रवृत्ति हो ।	जो धर्म क्रियाओं से रहित हैं ।
जिनके उच्च गोत्र का उदय है ।	जिनके नीच गोत्र का उदय हो ।
गुण और गुणवानों से जो सेवित है ।	जिनका आचार, खान-पान आदि असभ्य हो ।
पुण्य क्षेत्र में जन्म लेने वाले आर्य कहलाते हैं ।	पाप क्षेत्र में जन्म लेने वाले म्लेच्छ कहलाते हैं ।

जघन्य प्रतिपद्यमानस्थान

सकलसंयम ग्रहण के प्रथम समय में होने वाले संयमलब्धिस्थानों को प्रतिपद्यमानस्थान कहते हैं ।

उत्कृष्ट प्रतिपातस्थान से आगे असंख्यात लोकमात्र षट्स्थान का अंतर है ।

अंतर के पश्चात् जघन्य प्रतिपद्यमानस्थान है । यह मिथ्यात्व से सर्व जघन्य विशुद्धि के साथ सकलसंयम को प्राप्त करने वाले आर्यखंड के मनुष्य को सकलसंयम प्राप्त करने के प्रथम समय में होता है ।

यह पूर्व के उत्कृष्ट प्रतिपातस्थान से अनंतगुणा विशुद्ध है । यह सारे प्रतिपद्यमानस्थानों में सर्वजघन्य विशुद्धि वाला परिणाम है ।

म्लेच्छ-खंडज मनुष्य के संयमस्थान

इससे असंख्यात लोकमात्र षट्स्थान का उल्लंघन करके म्लेच्छ भूमिज मनुष्य का जघन्य प्रतिपद्यमानस्थान आता है ।

- यह म्लेच्छखंड के मनुष्य को जघन्य विशुद्धि से सकलसंयम ग्रहण करने के प्रथम समय में होता है, जो मिथ्यात्व से सकलसंयम को प्राप्त हुआ है ।

इससे म्लेच्छखंडज मनुष्य संबंधी उत्कृष्ट प्रतिपद्यमानस्थान अनंत गुणा है जो असंख्यात लोकमात्र षट्स्थान जाकर प्राप्त होता है ।

- जो म्लेच्छखंडज मनुष्य देशसंयम से उत्कृष्ट विशुद्धि के साथ सकलसंयम को प्राप्त करता है, उसके सकलसंयम के प्राप्त करने के प्रथम समय यह स्थान होता है ।

उत्कृष्ट प्रतिपद्यमान स्थान

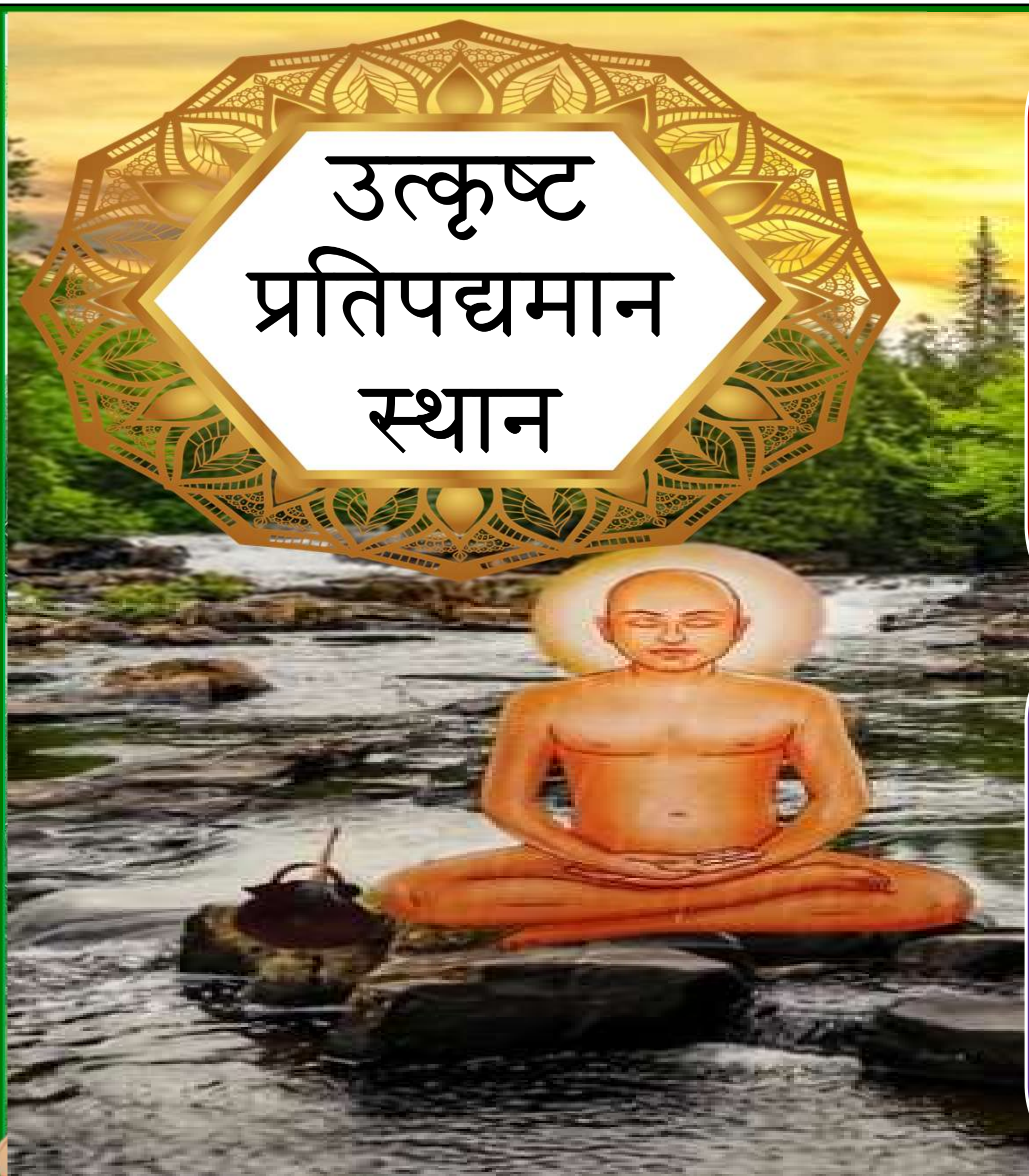

इससे आर्यखंडज मनुष्य संबंधी उत्कृष्ट प्रतिपद्यमानस्थान अनंतगुणा है, जो असंख्यात लोकमात्र षट्स्थान जाकर प्राप्त होता है ।

जो आर्यखंडज मनुष्य देशसंयम से उत्कृष्ट विशुद्धि के साथ सकल-संयम को प्राप्त करता है, उसके सकलसंयम को प्राप्त करने के प्रथम समय में यह परिणाम होता है ।

प्रतिपद्यमान स्थान

म्लेच्छ के जघन्य से उत्कृष्ट स्थान तक के परिणाम ही म्लेच्छ मनुष्य को हो सकते हैं ।

आर्य के जघन्य स्थान से उत्कृष्ट स्थान तक के सारे स्थान आर्यखंडज मनुष्य के संभव हैं ।

इन्हीं परिणामों में मध्य में मिथ्यात्व से, असंयत सम्यक्त्व से, क्षायोपशमिक देशसंयम से चढ़े हुए जीवों के सकलसंयम के प्रथम समय के परिणाम होते हैं ।

इनमें जघन्यस्थान; यथायोग्य मंद विशुद्धि युक्त जीव को तथा उत्कृष्ट स्थान यथायोग्य तीव्र विशुद्धि युक्त जीव को होते हैं ।

प्रश्न – म्लेच्छखंड के मनुष्यों को सकलसंयम कैसे हो सकता है?

उत्तर- 1) जो दिग्विजय में चक्रवर्ती के साथ आर्यखंड में आये हैं, जिनका चक्रवर्ती आदि के साथ वैवाहिक संबंध हुआ है, ऐसे म्लेच्छ राजाओं को सकलसंयम की प्राप्ति हो सकती है ।

2) चक्रवर्ती से विवाहित म्लेच्छ राजाओं की कन्याओं के गर्भ से उत्पन्न जो पुत्र हैं, उनकी मातृपक्ष अपेक्षा 'म्लेच्छ' संज्ञा है । उन्हें संयम प्राप्ति की योग्यता है । अतः म्लेच्छखंड के ऐसे मनुष्यों को सकलसंयम की प्राप्ति हो सकती है ।

तत्तोणुभयट्ठाणे, सामाइयछेदजुगलपरिहारे ।
पडिबद्धा परिणामा, असंखलोगप्पमा होंति ॥196॥

- अन्वयार्थ - (तत्तो) प्रतिपद्यमान स्थानों के ऊपर (अणुभयट्ठाणे) अनुभयस्थानों में
- (सामाइयछेदजुगलपरिहारे) सामायिक-छेदोपस्थापना युगल व परिहारविशुद्धि चारित्र के साथ (पडिबद्धा) प्रतिबद्ध (असंखलोगप्पमा) असंख्यात लोकप्रमाण (परिणामा) परिणाम (होतिं) होते हैं ॥196॥

सकलसंयम संबंधी अनुभय स्थान

- यथाख्यात संयम का अजघन्य-अनुत्कृष्ट एक ही स्थान
- अंतर
- सूक्ष्म-सांपराय का उत्कृष्ट स्थान (क्षपक के अंतिम समय)
- सूक्ष्म-सांपराय का जघन्य स्थान (अवरोहक के अंतिम समय)
- अंतर
- सामायिक-छेदोपस्थापना का उत्कृष्ट स्थान (अनिवृत्तिकरण क्षपक को अंतिम समय में)
- परिहार-विशुद्धिसंयम का उत्कृष्ट स्थान (सर्वविशुद्ध जीव को)
- परिहार-विशुद्धिसंयम का जघन्य स्थान (च्युत होकर सामायिक-छेदो. में जाने वाले को)
- सामायिक-छेदोपस्थापना का जघन्य अनुभयस्थान (1ले से 7वे में आने वाले को)

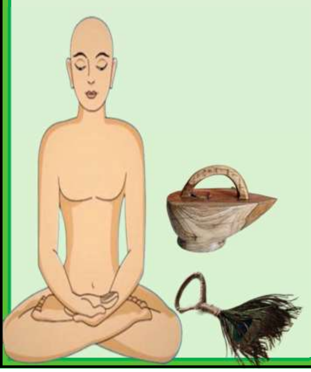

संयम संबंधी अनुभय स्थान

उत्कृष्ट प्रतिपद्यमानस्थान से असंख्यात लोकमात्र षट्स्थान का अंतर जाकर जघन्य अनुभयस्थान प्राप्त होता है ।

- यह जघन्य अनुभयस्थान; मिथ्यात्व से सकलसंयम को जघन्य विशुद्धि से प्राप्त करने वाले सकलसंयमी को संयम ग्रहण करने के द्वितीय समय में होता है ।
- यह सामायिक-छेदोपस्थापना संबंधी जघन्य अनुभयस्थान है ।

इससे असंख्यात लोकमात्र षट्स्थान जाकर परिहारविशुद्धि संयम संबंधी जघन्य स्थान प्राप्त होता है ।

- यह परिहारविशुद्धि से च्युत होकर सामायिक-छेदोपस्थापना प्राप्त करने वाले परिहारविशुद्धि संयमी के अंतिम समय में होता है ।

www.JainKosh.org

संयम संबंधी अनुभय स्थान

इससे असंख्यात लोकमात्र षट्स्थान जाकर परिहारविशुद्धि संयम का उत्कृष्ट संयमस्थान प्राप्त होता है ।

- यह सर्वविशुद्ध परिहारविशुद्धि संयमी को होता है ।

इससे असंख्यात लोकमात्र षट्स्थान जाकर सामायिक-छेदोपस्थापना का उत्कृष्ट संयमलब्धिस्थान होता है ।

- यह अनिवृत्तिकरण क्षपक के अंतिम समय में होता है ।

www.JainKosh.org

संयम लब्धिस्थानों की विशेषता

सर्व जघन्य प्रतिपातस्थान से उत्कृष्ट क्षपक अनिवृत्तिकरण तक जितने संयमलब्धिस्थान हैं, वे सब सामायिक-छेदोपस्थापना संयम के स्थान हैं । मध्य में परिहारविशुद्धि संयम के स्थान हैं ।

परिहारविशुद्धि से च्युत होकर असंयम नहीं प्राप्त होता, वरन् सामायिक-छेदोपस्थापना ही प्राप्त होता है ।

इसी प्रकार परिहारविशुद्धि संयम की प्राप्ति भी सामायिक-छेदोपस्थापना संयमपूर्वक ही होती है ।

www.JainKosh.org

अल्प-बहुत्व

संयमस्थान	प्रमाण	गुणकार	संदृष्टि	उदाहरण
प्रतिपात	असंख्यात लोक	स्तोक	≡ ∂ ९ ९	100
प्रतिपद्यमान	असंख्यात लोक	असंख्यात लोक गुणा	≡ ∂ ८ ९ ९	900
अनुभय	असंख्यात लोक	असंख्यात लोक गुणा	≡ ∂ ८ ९	9000
सर्वस्थान	असंख्यात लोक	कुछ अधिक	≡ ∂	10000

सामायिक संयम

व्रत धारण आदि 5 प्रकार के संयम को संग्रह करके

सर्व सावद्य के त्यागरूप

अभेद संयम

सामायिक संयम कहलाता है ।

ऐसा संयम है —

अनुत्तर	दुःखगम्य
↓	↓
इसके समान दूसरा नहीं	दुर्लभपने से प्राप्त होता है ।

www.JainKosh.org

छेदोपस्थापना संयम

भेदरूप से 5 प्रकार के संयम में स्वयं को स्थापित करना ।

छेद

- भेदरूप संयम
- अर्थात् 5 प्रकार के व्रत, समिति आदि में

उपस्थापन

- अपने को स्थापित करना ।

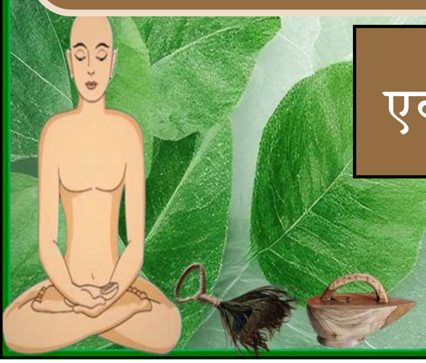

एक ही संयम को द्रव्यार्थिक नय से सामायिक संयम कहते हैं एवं पर्यायार्थिक नय से छेदोपस्थापना संयम कहते हैं ।

परिहार-विशुद्धि संयम

जो जीव 5 समिति, 3 गुप्ति से संयुक्त होकर

सदाकाल हिंसारूप सावद्य को त्याग करता है

वह परिहार-विशुद्धि संयमी है ।

www.JainKosh.org

परिहार-विशुद्धि संयम

परिहार

प्राणियों की हिंसा का त्याग

विशुद्धि

विशेष शुद्धता

सूक्ष्म सांपराय संयम

सूक्ष्म संज्वलन लोभ के उदय को भोगने वाला

उपशमक या क्षपक जीव

सूक्ष्म-सांपराय संयमी है ।

यह संयम यथाख्यात से कुछ ही कम है ।

www.JainKosh.org

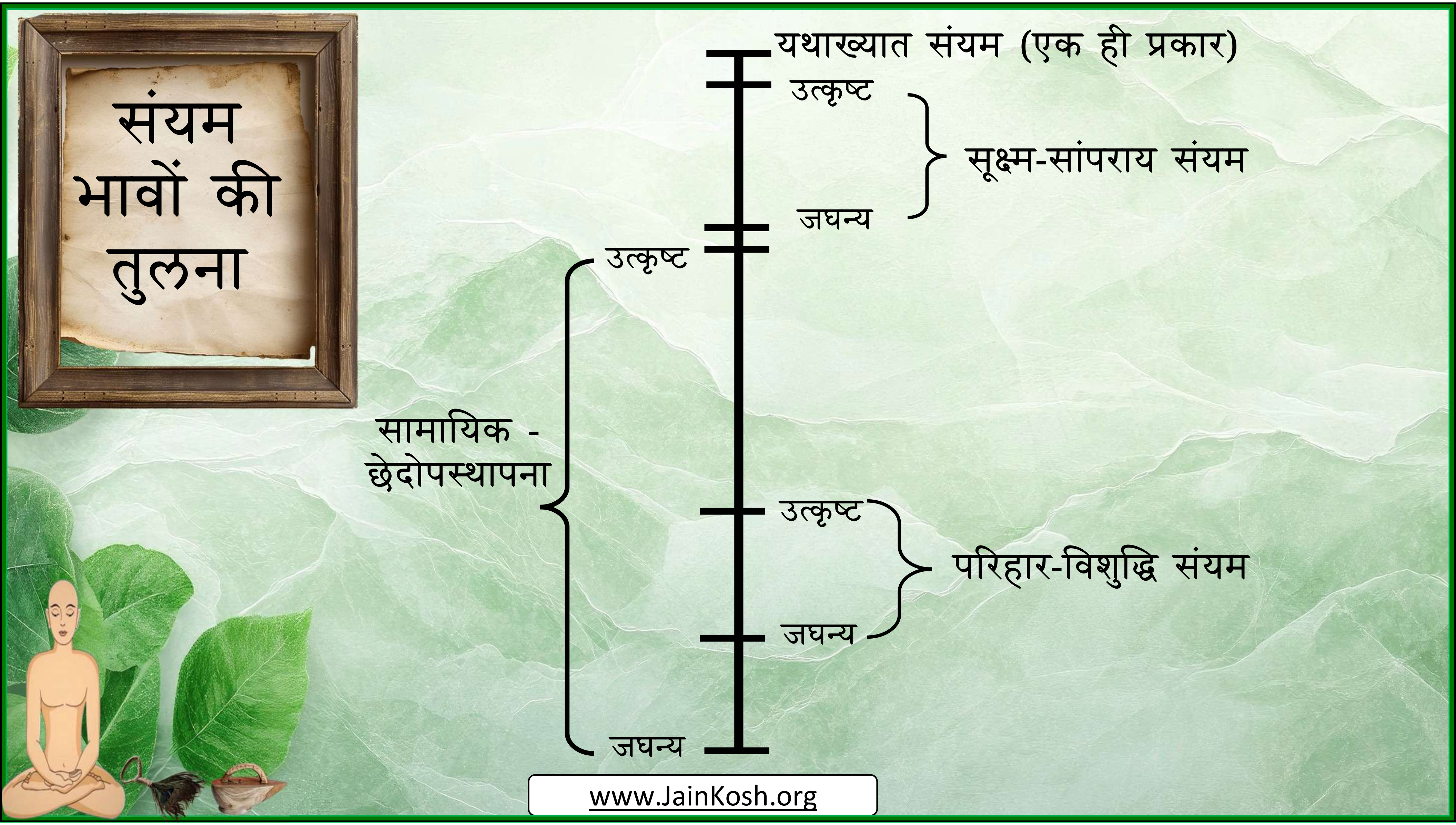
संयम भावों की तुलना
यथाख्यात संयम (एक ही प्रकार)
उत्कृष्ट
जघन्य
सूक्ष्म-सांपराय संयम
उत्कृष्ट
सामायिक - छेदोपस्थापना
उत्कृष्ट
जघन्य
परिहार-विशुद्धि संयम
जघन्य
www.JainKosh.org

तत्तो य सुहुमसंजम, पडिबद्धाऽसंखसमयमेत्ता हु। तत्तो दु जहाखादं, एयविहं संजमं होदि ॥197॥

- अन्वयार्थ - (तत्तो य) उससे आगे (सुहुमसंजम पडिबद्धा) सूक्ष्मसांपराय संयम से संबंधित (असंखसमयमेत्ता हु) असंख्यात समयमात्र स्थान हैं।
- (तत्तो दु) परन्तु उससे आगे (जहाखादं संजमं) यथाख्यात संयम (एयविहं) एक प्रकार का (होदि) है ॥197॥

www.JainKosh.org

सूक्ष्म-सांपराय संयमस्थान

सामायिक-छेदोपस्थापना के उत्कृष्ट स्थान से असंख्यात लोकमात्र षट्स्थान का अंतर करके सूक्ष्म-सांपराय का जघन्य संयमस्थान प्राप्त होता है ।

- सूक्ष्म-सांपराय का जघन्य स्थान उपश्रमश्रेणी से उतरते हुये सूक्ष्म-सांपराय के अंतिम समय में होता है, जो अगले समय में अनिवृत्तिकरण को प्राप्त करेगा ।

इससे असंख्यात समय मात्र स्थान जाने पर सूक्ष्म-सांपराय संयम का उत्कृष्ट संयमस्थान होता है ।

- यह क्षपक सूक्ष्म-सांपरायवर्ती के अंतिम समय में होता है । इसके अगले समय में क्षपक क्षीणकषाय हो जाता है ।

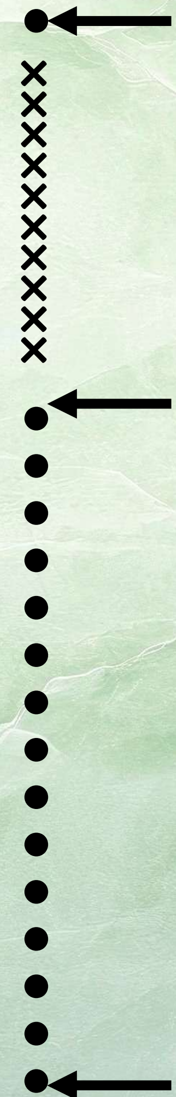

सूक्ष्म-सांपराय संयमस्थान

जघन्य से उत्कृष्ट स्थान के बीच असंख्यात लोकमात्र स्थान नहीं हैं, असंख्यात ही स्थान हैं । क्योंकि अनिवृत्तिकरण से ही सदृश विशुद्धि परिणाम का नियम कहा था । अत: सूक्ष्म-सांपरायवर्ती जीवों के कुल परिणाम अंतर्मुहूर्त मात्र ही होते हैं । इस कारण यहाँ असंख्यात समयों के पश्चात् उत्कृष्टस्थान कहा है ।

यद्यपि यहाँ असंख्यात लोकप्रमाण स्थान नहीं हैं, तदपि यहाँ अनंत गुणी विशुद्धि प्रत्येक परिणाम में पायी जाती है क्योंकि यहाँ स्पर्धकगत अनुभागोदय नहीं पाया जाता है, कृष्टिगत अनुभागोदय रहता है ।

www.JainKosh.org

यथाख्यात संयमस्थान

सूक्ष्म-सांपराय के उत्कृष्ट संयमस्थान से असंख्यात लोकमात्र षट्स्थान का अंतर करके यथाख्यातसंयम का स्थान प्राप्त होता है ।

यह यथाख्यात संयम एक ही विशुद्धि का होता है, जो 11वें से 14वें गुणस्थान में पाया जाता है । इसके जघन्य, उत्कृष्ट विकल्प नहीं हैं, क्योंकि चारित्र मोहनीय प्रकृति के सर्व प्रकृति, स्थिति, अनुभाग, प्रदेशों का सर्वोपशम करने से अथवा सर्वक्षय करने से यह उत्पन्न हुआ है ।

यह स्थान सभी स्थानों से अनंतगुणी विशुद्धि वाला सकलसंयम का उत्कृष्ट स्थान है ।

पडचरिमे गहणादीसमये पडिवाददुगमणुभयं तु ।
तम्मज्झे उवरिमगुणगहणाहिमुहे य देसं वा ॥198॥

- अन्वयार्थ - (पडचरिमे) संयम से च्युत होते समय अंतिम समय में और (गहणादीसमये) संयम ग्रहण करने के प्रथम समय में क्रमश: (पडिवाददुगं) प्रतिपात और प्रतिपद्यमान स्थान होते हैं।
- (अणुभयं तु) अनुभयस्थान (देसं वा) देशसंयम के समान (तम्मज्झे) उन दो स्थानों के मध्य में (य) और (उवरिमगुणगहणाहिमुहे) ऊपर के गुणस्थान को ग्रहण करने के सन्मुख होने पर होते हैं ॥198॥

संयम स्थानों का स्वरूप

प्रतिपातस्थान

- सकलसंयम से नीचे गिरते समय अंतिम समय में होता है ।

प्रतिपद्यमानस्थान

- सकलसंयम ग्रहण करने के प्रथम समय में होता है ।

अनुभयस्थान

- प्रतिपात और प्रतिपद्यमान के समय के बीच में तथा उपरितन गुणस्थानों में अभिमुख हुये जीव के होता है ।

www.JainKosh.org

संयमस्थान - विशेष

यहाँ छठवें, सातवें गुणस्थान के संयमस्थान अलग से नहीं कहे हैं। वे सब सकलसंयम के स्थानों में आ जाते हैं।

इन्हीं स्थानों से ज्ञात होता है कि -

- 1) कभी छठवें की विशुद्धि, सातवें से भी अधिक होती है।
- 2) गिरना अधिक विशुद्धि (अनुभयस्थान) से सीधे प्रतिपात स्थान में जाकर होता है, अर्थात् शीघ्रता से होता है। परंतु विशुद्धि का बढ़ना धीरे होता है। क्योंकि प्रतिपद्यमान स्थान प्राप्त कर फिर अनुभयस्थान की प्राप्ति होती है।

पडिवादादित्तिदयं, उवरुवरिमसंखलोगगुणिदकमा ।
अंतरछक्कपमाणं, असंखलोगा हु देसं वा ॥199॥

- अन्वयार्थ - (पडिवादादित्तिदयं) प्रतिपातादि तीन प्रकार के स्थान (उवरुवरिं) ऊपर-ऊपर (असंखलोकगुणिदकमा) क्रम से असंख्यात लोकगुणित हैं।
- (अंतरछक्कपमाणं) छह अंतरों का प्रमाण (देसं वा) देशसंयत के समान (असंखलोगा हु) असंख्यात लोकप्रमाण है ॥199॥

6 अंतर के स्थान

प्रतिपात आदि तीन स्थानों के मध्य में यथायोग्य अंतर होते हैं।
प्रत्येक अंतर असंख्यात लोकमात्र षट्स्थान का है।
कुल 6 अंतर पाये जाते हैं, जो इस प्रकार हैं-

अंतर क्रमांक	स्थान
1	मिथ्यात्व के सम्मुख संयमी जीव के अंतिम स्थान के पश्चात्
2	असंयत सम्यक्त्व के सम्मुख संयमी जीव के अंतिम स्थान के पश्चात्
3	देशसयंत के सम्मुख संयमी जीव के अंतिम स्थान के पश्चात्
4	उत्कृष्ट प्रतिपद्यमानस्थान के पश्चात्
5	उत्कृष्ट सामायिक-छेदोपस्थापना संयमस्थान के पश्चात्
6	उत्कृष्ट सूक्ष्म-सांपराय सयंम के पश्चात्

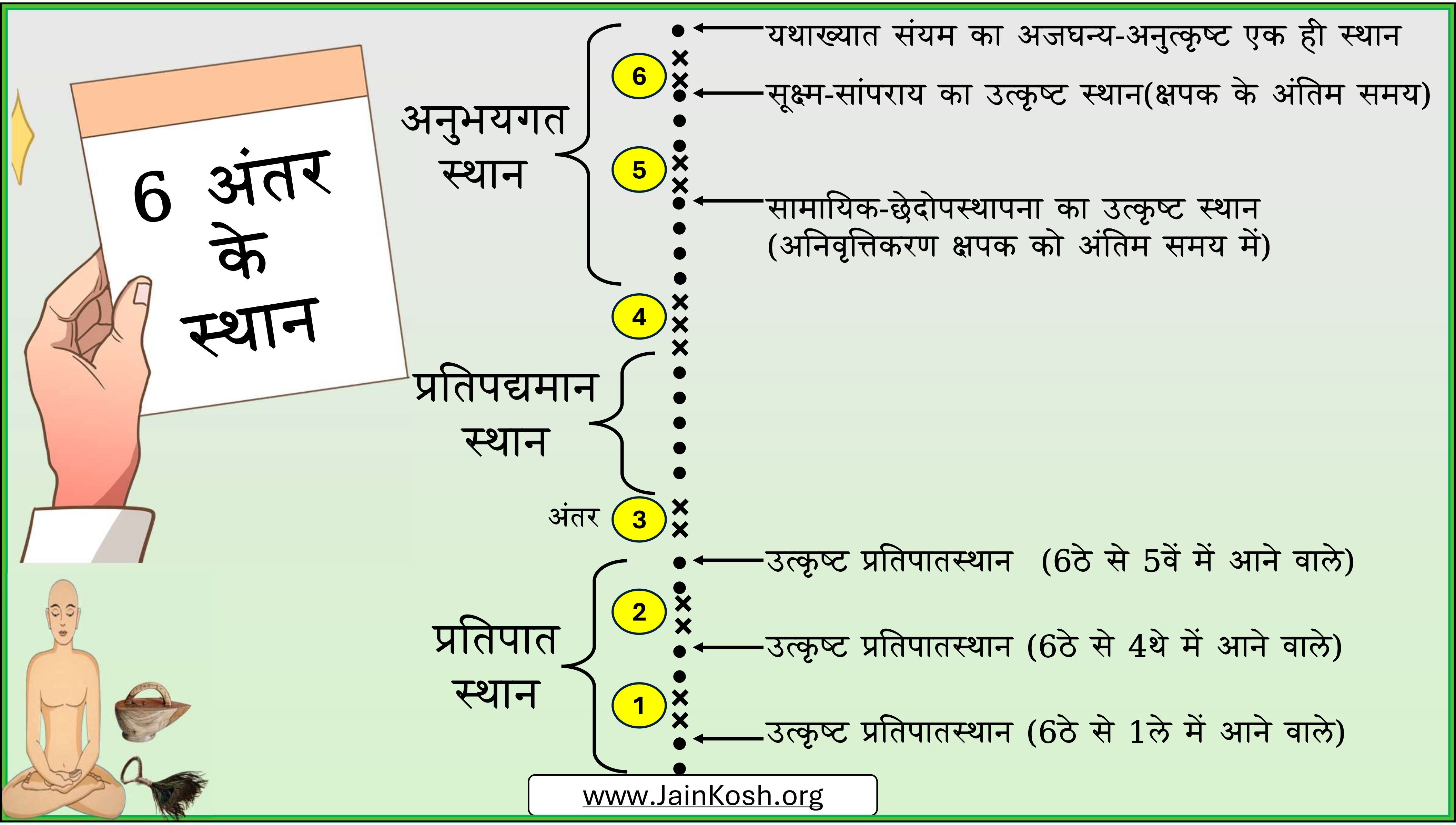

6 अंतर के स्थान
अनुभयगत स्थान
प्रतिपद्यमान स्थान
प्रतिपात स्थान
अंतर
6
5
4
3
2
1
यथाख्यात संयम का अजघन्य-अनुत्कृष्ट एक ही स्थान
सूक्ष्म-सांपराय का उत्कृष्ट स्थान(क्षपक के अंतिम समय)
सामायिक-छेदोपस्थापना का उत्कृष्ट स्थान
(अनिवृत्तिकरण क्षपक को अंतिम समय में)
उत्कृष्ट प्रतिपातस्थान (6ठे से 5वें में आने वाले)
उत्कृष्ट प्रतिपातस्थान (6ठे से 4थे में आने वाले)
उत्कृष्ट प्रतिपातस्थान (6ठे से 1ले में आने वाले)
www.JainKosh.org

मिच्छयददेसभिण्णे, पडिवादट्ठाणगे वरं अवरं ।
तप्पाउग्गकिलिट्ठे, तिव्वकिलिट्ठे कमे चरिमे ॥200॥

- अन्वयार्थ - (मिच्छयददेसभिण्णे) मिथ्यात्व, असंयत और देशसंयत के सन्मुखता की अपेक्षा से भिन्न (पडिवादट्ठाणगे) प्रतिपातस्थानों में (कमे) क्रम से (वरं) उत्कृष्ट स्थान (तप्पाउग्गकिलिट्ठे) उसके योग्य संक्लेशयुक्त जीव में और (अवरं) जघन्य स्थान (तिव्वकिलिट्ठे) तीव्रसंक्लेशयुक्त जीव में (चरिमे) अन्तिम समय में होता है ॥200॥

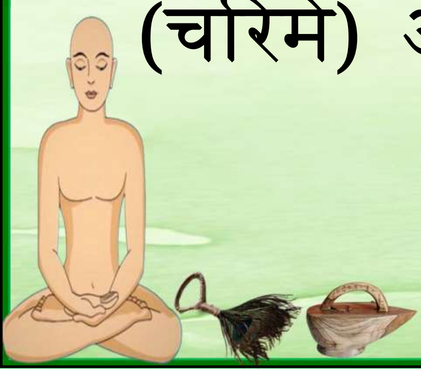

मिथ्यात्व, असंयत सम्यक्त्व, देशसंयत के अभिमुख प्रतिपातस्थान का

जघन्य स्थान	उत्कृष्ट स्थान
उत्कृष्ट संक्लिष्ट के	तत्प्रायोग्य संक्लिष्ट के

www.JainKosh.org

पडिवज्जजहण्णदुगं, मिच्छे उक्कस्सजुगलमवि देसे । उवरिं सामाइयदुगं, तम्मज्झे होंति परिहारा ॥201॥

- अन्वयार्थ - (पडिवज्जजहण्णदुगं) प्रतिपद्यमानस्थान का जघन्यद्विक (आर्य का जघन्य और म्लेच्छ का जघन्य) (मिच्छे) मिथ्यात्व से चढ़ने वाले जीव को होता है।
- (उक्कस्सजुगलमवि) उत्कृष्टयुगल भी (आर्य उत्कृष्ट और म्लेच्छ उत्कृष्ट) (देसे) देशसंयत से चढ़ने वाले को होता है।
- (उवरि) उसके ऊपर (सामाइयदुगं) सामायिकद्विक के मध्य में (परिहारा) परिहारविशुद्धि के स्थान (होंति) हैं ॥201॥

जघन्य और उत्कृष्ट प्रतिपद्यमानस्थान

मिथ्यात्व से सकलसंयम प्राप्त करने वाले आर्य और म्लेच्छ मनुष्य को <u>जघन्य</u> प्रतिपद्यमानस्थान होता है ।

देशसंयम से सकलसंयम प्राप्त करने वाले म्लेच्छ और आर्य मनुष्य को <u>उत्कृष्ट</u> प्रतिपद्यमानस्थान होता है ।

उत्कृष्ट प्रतिपद्यमानस्थान से ऊपर सामायिक-छेदोपस्थापना संयम के स्थानों के मध्य में परिहारविशुद्धि संयम के स्थान भी होते हैं ।

परिहारस्स जहण्णं, सामायियदुगे पडंत चरिमम्हि ।
तज्जेट्ठं सट्ठाणे, सव्वविसुद्धस्स तस्सेव ॥202॥

- अन्वयार्थ -(परिहारस्स जहण्णं) परिहारविशुद्धि का जघन्य (सामायियदुगे पडंत) सामायिक-छेदोपस्थापना में गिरने वाले जीव को (चरिमम्हि) अंतिम समय में होता है।
- (तज्जेट्ठं) उसका उत्कृष्ट स्थान (तस्सेव) उसके ही (सट्ठाणे) स्वस्थान में (सव्वविसुद्धस्स) सर्वविशुद्ध जीव को होता है ॥202॥

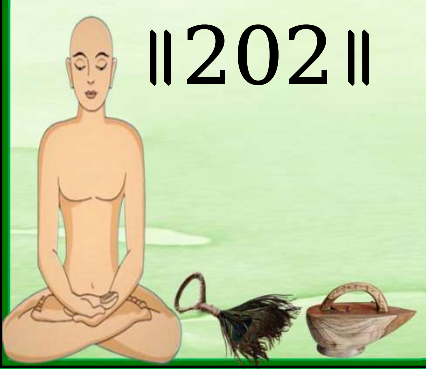

परिहार-विशुद्धि के जघन्य और उत्कृष्ट स्थान

परिहारविशुद्धि का <u>जघन्य</u> स्थान संक्लेश के कारण सामायिक-छेदोपस्थापना में गिरने वाले परिहारविशुद्धि संयमी के अंत समय होता है ।

<u>उत्कृष्ट</u> स्थान सर्वविशुद्ध स्वस्थानवर्ती के होता है ।

सामायियदुगजहण्णं, ओघं अणियट्टिखवगचरिमम्हि ।
चरिमणियट्टिस्सुवरिं, पडंत सुहुमस्स सुहुमवरं ॥203॥

- अन्वयार्थ - (सामायियदुगजहण्णं) सामायिकद्विक का जघन्य स्थान (ओघं) सामान्य जघन्य के समान जानना चाहिए।
- उसका उत्कृष्ट स्थान (अणियट्टिखवगचरिमम्हि) अनिवृत्तिकरण क्षपक के अंतिम समय में होता है।
- (सुहुमवरं) सूक्ष्म-सांपराय का जघन्य स्थान (चरिमणियट्टिस्सुवरिं पडंत सुहुमस्स) अनिवृत्तिकरण गुणस्थान में गिरनेवाले अंतिम समयवर्ती सूक्ष्म-सांपराय को होता है ॥203॥

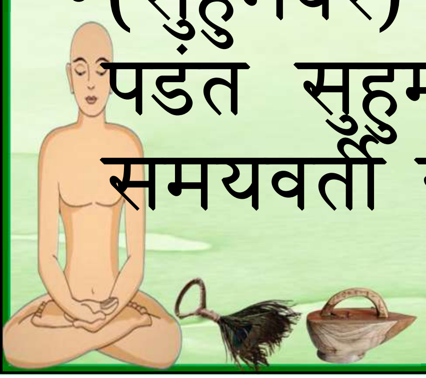

सामायिक-छेदोपस्थापना संयम के जघन्य-उत्कृष्ट स्थान

जघन्य

- सयंमलब्धि का जघन्यस्थान (याने जघन्य प्रतिपातस्थान) सामायिक-छेदोपस्थापना संयम का जघन्य स्थान है।

उत्कृष्ट

- सामायिक-छेदोपस्थापना का उत्कृष्ट स्थान क्षपक अनिवृत्तिकरण के अंतिम समय होता है।

खवगसुहुमस्स चरिमे, वरं जहाखादमोघजेट्ठं तं ।
पडिवाददुगा सव्वे, सामाइयछेदपडिबद्धा ॥204॥

- अन्वयार्थ - (खवगसुहुमस्स चरिमे वरं) क्षपक सूक्ष्म-सांपराय के अंतिम समय में सूक्ष्म-सांपराय संयम का उत्कृष्ट स्थान होता है।
- (ओघजेट्ठं) सामान्य से जो उत्कृष्ट स्थान है (तं) वह (जहाखादं) यथाख्यात संयम का जानना चाहिए।
- (पडिवाददुगा) प्रतिपातद्विक के (प्रतिपात और प्रतिपद्यमान इन दोनों के) (सव्वे) सभी स्थान (सामाइयछेदपडिबद्धा) सामायिक व छेदोपस्थापना से संबंधित हैं ॥204॥

www.JainKosh.org

सूक्ष्म-सांपराय के जघन्य-उत्कृष्ट स्थान

जघन्य

- सूक्ष्म-सांपराय से अनिवृत्तिकरण में प्रवेश करने वाले अंतिम समयवर्ती सूक्ष्म-सांपराय उपशमक के जघन्य सूक्ष्म-सांपराय संयम होता है ।

उत्कृष्ट

- क्षपक सूक्ष्म-सांपरायवर्ती के अंतिम समय में सूक्ष्म-सांपराय का उत्कृष्ट स्थान होता है ।

यथाख्यातसंयम संयमलब्धि का उत्कृष्ट स्थान है । इसके जघन्य आदि विकल्प नहीं है ।

कौन-से स्थान कौन-से संयम के हैं?

संयमस्थान	संयम
प्रतिपातस्थान	सामायिक-छेदोपस्थापना संयम संबंधी
प्रतिपद्यमान स्थान	सामायिक-छेदोपस्थापना संयम संबंधी
अनुभयस्थान	पांचों संयम संबंधी

प्रतिपात के नियम

परिहार विशुद्धि से गिरकर सामायिक-छेदोपस्थापना में आने का

सूक्ष्म-सांपराय से गिरकर सामायिक-छेदोपस्थापना में आने का

यथाख्यात से गिरकर सूक्ष्म-सांपराय में आने का नियम है ।

प्रश्न- उपशामक यथाख्यात, सूक्ष्म-सांपराय में मरण को प्राप्त हुए के असंयम में सीधे प्रतिपात होता है । वह क्यों नहीं कहा?

उत्तर- यहाँ संयम का घात करने वाली कषाय के उदय से उत्पन्न संक्लेश के कारण अथवा गुणस्थान का काल समाप्त होने से होने वाले प्रतिपात की विवक्षा है । मरण के कारण से होने वाले प्रतिपात की विवक्षा नहीं है ।

यदि मरण संबंधी प्रतिपात की विवक्षा हो, तो देवगति में असंयत सम्यक्त्व में ही पतन होता है; मिथ्यात्व में या देशसंयम में पतन नहीं होता है ।

- Reference : श्री लब्धिसार टीकासहित अनुवाद – ब्र. सुजाता रोटे, बाहुबली (वर्तमान में आर्यिका श्री शुद्धोहंश्री माताजी)
- For updates / feedback / suggestions, please contact
  - Sarika Jain, sarikam.j@gmail.com
  - www.jainkosh.org
  - ☎: 94066-82889
- इसी विषय के विडियो लेक्चर हमारे चैनल पर उपलब्ध हैं । आप अवश्य लाभ लें । www.Jainkosh.org/wiki/Videos पेज पर जाएँ एवं लब्धिसार की प्लेलिस्ट चुनें ।